होम रूल और गूलर का फूल और बरबैन्क

डॉ. किशोर पंवार

बात पुरानी ज़रूर है पर महत्त्वपूर्ण और मज़ेदार है। देश अंग्रेज़ों का गुलाम था। अंग्रेज़ी शासन से परेशान कुछ देश भक्त नेताओं ने होम रूल आंदोलन शुरू किया था। होम रूल का मतलब अंग्रेज़ों के अधीन रहकर ही देश की शासन व्यवस्था में हिस्सेदारी करना था। होम रूल की मांग करने वालों में पंडित मदन मोहन मालवीय प्रमुख थे। वे अपनी जन सभाओं में होम रूल की मांग उठाया करते थे। उनकी इस मांग का मज़ाक एक अंग्रेज़ी पादरी ने कुछ यूं कहकर उड़ाया था *"कहते हैं मालवीय जी, होम रूल लेंगे। दीवाने हो गए हैं, गूलर का फूल लेंगे।"* इसके जवाब में एक वतनपरस्त शायर ने अखबारों में यह शेर छपवाया था- *"जब होमरूल होगा, बरबैन्क जन्म लेंगे, जी हां जनाब तब तो, गूलर भी फूल देंगे।"*

गरज यह कि जब कोई व्यक्ति किसी दुर्लभ वस्तु की मांग करता है तब कहा जाता है कि आप तो 'गूलर का फूल' मांग रहे हैं। कालान्तर में 'गूलर का फूल' एक मुहावरा बन गया। परंतु सच्ची लगन हो तो गूलर में भी फूल खिलाए जा सकते हैं।

कड़े संघर्ष और हज़ारों कुर्बानियां देकर मिली आज़ादी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। उस शायर को सलाम जिसने दमन और शोषण के उस दौर में भी यह हिम्मत कहने की दिखाई कि होम रूल होने पर हमारे देश में भी बरबैन्क जन्म लेंगे और तब गूलर में भी फूल खिलेंगे। ज़ाहिर है, बरबैन्क उस ज़माने के कोई प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री रहे होंगे। वैसे इस संदर्भ में वनस्पति विज्ञान की प्रचलित पाठ्य पुस्तकों में बरबैन्क का कोई अता-पता नहीं मिला। पता नहीं क्यों?

आज़ादी के बाद देश में कृषि के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। देश भर में फैले गेहूं, चावल, कपास, मूंगफली, गन्ना, सोयाबीन जैसी फसलों के आई.सी.ए.आर. के अनुसंधान केंद्रों में कार्यरत वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत और लगन की बदौलत आज हम अनाज के उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं। कभी हम अनाज का आयात करते थे, अब निर्यात करते हैं। इस वर्ष गेहूं की बम्पर फसल के चलते हालात ऐसे हैं कि अनाज भरने के लिए बारदाने नहीं मिल रहे हैं। और तो और, खरीदे गए गेहूं के भण्डारण के लिए गोदाम तक नहीं है।

फलों के उत्पादन में हम 'एक अनार सौ बीमार' से वर्तमान में हर बीमार को एक अनार की स्थिति में पहुंच गए हैं। हरित क्रांति के साथ देश में फल और सब्ज़ी क्रांति भी हुई है। आम, अनार और सेब जो कभी अस्पतालों के आसपास या फल बाज़ार में ही मिलते थे, अब ठेलों

और बैलगाड़ियों में गली-मुहल्लों में बेचे जा रहे हैं।

इन बदलावों के मूल में वे वनस्पति विज्ञानी हैं जिन्हें हम पौध प्रजनक या उद्यानविद कहते हैं। इसमें बेशक सरकार की नीतियों का भी अहम योगदान है। सरकार और वैज्ञानिकों की बदौलत ही आज हम खाद्यान्न, फल एवं सब्ज़ियों से संपन्न है। कुछ प्रमुख भारतीय पौध प्रजनकों के नाम का ज़िक्र ज़रूरी है। बी.पी. पाल , एम.एस. स्वामीनाथन, डॉ. के. रमैया, डॉ. एन. पार्थसारथी, डॉ. ए.बी. जोशी, एस.एस. राजन, ई.के. जानकी अम्मल और डॉ. आर.एच. रिछारिया जैसे वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत एवं लगन से आज हम अनाज के क्षेत्र में अपना सिर गर्व से ऊंचा उठाए हैं।

जिन बरबैन्क महोदय का ऊपर ज़िक्र आया है वे भी एक प्रसिद्ध वनस्पतिशास्त्री एवं उद्यान विशेषज्ञ थे। अकेले उन्होंने 800 से ज़्यादा प्रकार के फल, फूल और सब्ज़ियों की प्रजातियां एवं किस्में तैयार की थीं।

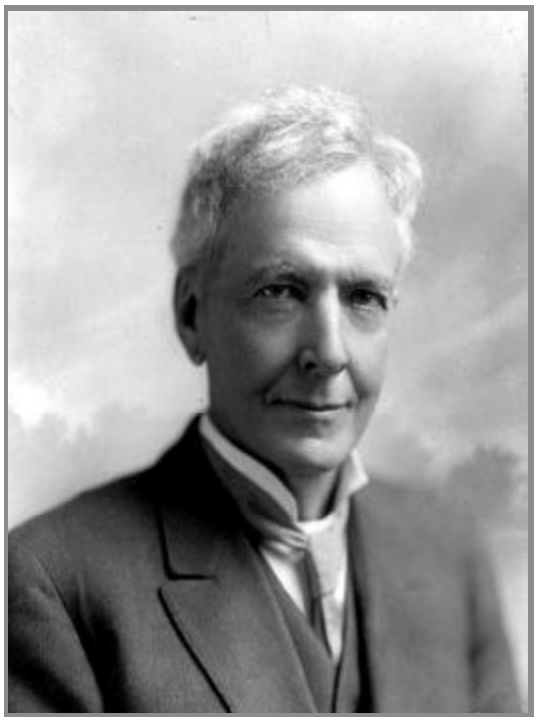

लूथर बरबैन्क (1849-1926)

लूथर बरबैन्क एक अमरीकी वनस्पतिशास्त्री थे। उनका जन्म लैंकास्टर में हुआ था। उनके पास कोई बड़ी डिग्री नहीं थी, केवल प्राथमिक शिक्षा प्राप्त थे। परन्तु अपनी लगन, सूझबूझ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पौधों से प्यार के चलते दुनिया के जाने माने उद्यानविद बने।

बरबैन्क का जन्म 7 मार्च 1849 को हुआ था। कैलिफोर्निया में आपकी विशिष्ट उपलब्धियों के चलते 7 मार्च वृक्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है और उस दिन वृक्ष लगाए जाते हैं। इस कर्मठ उद्यानविद एवं प्रकृतिवेत्ता की मृत्यु 77 वर्ष की आयु में 1926 में 11 अप्रैल को हुई। उन्हें उनके ही बगीचे में ग्रीनहाउस के पास दफनाया गया था।

बरबैन्क ने पौधों की कई नई किस्में ईजाद की। उन्होंने अपने कार्य में कलम लगाना और संकरण जैसी विधियों का इस्तेमाल कर लगभग 800 किस्में तैयार कीं। उनकी प्रमुख उपलब्धियों में प्लम की 113 किस्मों के अलावा 10 किस्में बेरीज़ व 30 किस्में लिली की हैं। बरबैन्क ने हर तरह के पौधों पर कार्य किया। फल, फूल, अनाज, सब्ज़ियां, यहां तक कि घास भी उनके कार्य का हिस्सा रहीं। बरबैन्क को सबसे ज़्यादा प्रसिद्धि मिली आलू की एक नई किस्म बरबैन्क पोटेटो से। यह किस्म आज भी अमरीका में सर्वाधिक उगाई जाती है। इस आलू का छिलका लाल-पीला होता है। इसे चिप्स के लिए उपयुक्त माना जाता है।

बरबैन्क ने कैक्टस की एक कांटे रहित किस्म बनाई जिसे पशु चारे के रूप में उपयोग किया जा सकता था। इसके अलावा उन्होंने शस्ता, डेज़ी, फायर पॉपी, एलरटॉपीच और सान्तारोज़ा प्लम भी विकसित किए। उनका अपना ग्रीनहाउस एवं नर्सरी थी जहां वे अपने प्रायोगिक कार्य करते थे।

बरबैन्क ने पौधों की नई-नई किस्मों की खोज के साथ ही कई किताबें भी लिखी जिनसे उनकी प्रसिद्धि और बढ़ी। उनकी प्रमुख किताबों में 'न्यू क्रिएशंस इन फ्रूट्स एंड फ्लावर्स'(1893), 'दी ट्रेनिंग ऑफ द ह्यूमन प्लांट'(1907), 'हाऊ प्लांट्स आर ट्रेन्ड टू वर्क फार

मैन'(1921), 'हार्वेस्ट ऑफ दी इअर्स'(1927), 'हिज़ मेथड्स्, डिस्कवरी एंड देअर प्रेक्टिकल एप्लीकेशन्स' और 'पार्टनर ऑफ नेचर' (1939) प्रमुख हैं।

ऐसा नहीं है कि बरबैन्क को शोहरत ही शोहरत मिली है। उन दिनों के वैज्ञानिकों द्वारा उनके कार्य की आलोचना भी की गई। उन पर आरोप था कि वे अपने कार्य का व्यवस्थित रिकार्ड नहीं रखते थे जो वैज्ञानिक कार्यों में ज़रूरी होता है। पर्ड्यू विश्वविद्यालय के हार्टीकल्चर और लैंडस्केपिंग के प्रोफेसर जूल्स जैनिक ने एनसायक्लोपिडिया 2004 के अंक में यहां तक कहा कि बरबैन्क को सही अर्थों में वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता।

खैर कुछ भी हो बरबैन्क की उपलब्धियां अनेक हैं। उनके कार्यों की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता। किसी कार्य की महत्ता उसकी उपयोगिता में ही होती है। इस लिहाज़ से बरबैन्क को भले वैज्ञानिक न माना जाए पर जो कार्य उन्होंने किए हैं वे वैज्ञानिक श्रेणी के तो हैं ही। नई पादप किस्में ईजाद करना वैज्ञानिकों का काम है और यह बरबैन्क ने बखूबी किया। किसी के कार्य को नकाराना वैज्ञानिक जगत में भी होता है। वैज्ञानिक भी आखिर इन्सान होते है। ईर्ष्या और प्रसिद्धि से वे परे नहीं होते। भारतीय वनस्पति शास्त्र की पुस्तकों में इतने बड़े उद्यानिकीविद, लेखक, प्रकृतिविद और खोजकर्ता का नाम न होना अखरता है। उनके कार्यों के महत्त्व के आलोक में उन्हें हायर सेकेण्डरी व स्नातक स्तर की पाठ्य पुस्तकों में थोड़ा स्थान तो मिलना ही चाहिए ताकि आगामी पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा ले सके। ***(स्रोत फीचर्स)***

इस अंक के चित्र निम्नलिखित स्थानों से लिए गए हैं -

page no. 02 - http://rwsboa2011.blogspot.in/2012/04/pallid-cuckoo-and-western-bowerbird.html

page no. 03 - http://enriquesantos.com/two-human-fetuses-to-be-used-in-voodoo-ritual-found-in-luggage-at-miami-airport

page no. 06 - http://en.wikipedia.org/wiki/Roulette

page no. 15 -http://www.asknature.org/strategy/56186402ae64a54fa6c0fccfb2b51a0e

page no. 20 - http://pcstem.com/2012/03/13/iceman/

page no. 21 - http://1.bp.blogspot.com/-X-P6tQl-SWI/T4_OfeteY6I/AAAAAAAAEDM/lsXNmRbWQgY/s1600/monsoons.jpg

page no. 24 - http://www.gitesandmore.co.uk/qgz4q2ak%5B1%5D.jpg

page no. 30 - http://www.flickr.com/photos/dinesh_valke/2520246287/

page no. 31 - http://en.wikipedia.org/wiki/Luther_Burbank

page no. 37 - http://myboringoldlife.blogspot.in/

Last cover - new scientist